प्रेमचंद

जीवन और दर्शन

सम्पादक

डॉ. आलोक कुमार सिंह

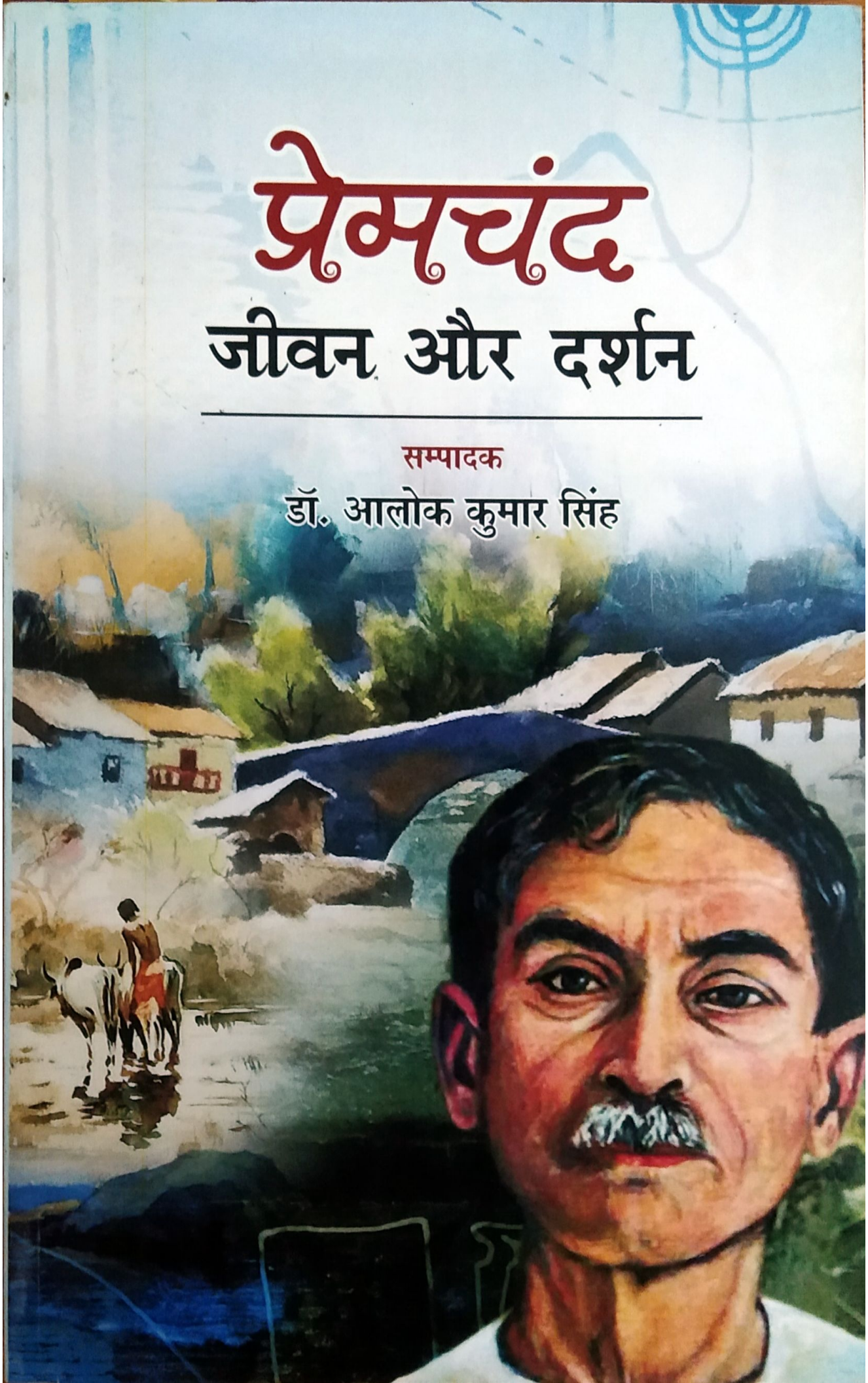

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रकाशन :
उर्वशीयम् (प्रकाशक एवं वितरक)
बी-12, सी-2/सी-3, वर्धमान काम्पलेक्स,
यमुना विहार, दिल्ली-110053
मो. 9958130010, 9868354446
E-mail : urvashiyam@gmail.com

मूल्य : रु. 250/-

प्रथम संस्करण : 2016

ISBN -978-93-82265-22-1

लेजर कंपोजिंग :
J.D. Computers : 2157, Outram Line, Kingsway Camp
Delhi-110009 Mob. : **9818455819**

मुद्रक :
दयाशंकर तिवारी द्वारा उर्वशीयम्
बी-12, सी-2/सी-3, वर्धमान काम्पलेक्स,
यमुना विहार, दिल्ली-110053 के लिए प्रकाशित।

शाखा कार्यालय :
शंकर सदन, निराला नगर,
सिवान, बिहार 831226

- **कफन एक पुनर्मूल्यांकन** 118
  सुशांत कुमार शर्मा
- **प्रेमचन्द का चिंतन एवं दलित संदर्भों में मूल्यांकन** 130
  डॉ. रंजना पाण्डेय
- **प्रेमचन्द : जीवन्त व्यक्तित्व** 148
  हरिओम कुमार द्विवेदी
- **उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द** 152
  डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र
- **प्रेमचन्द के उपन्यासों में धर्म भावना** 159
  डॉ. आलोक कुमार सिंह
- **प्रेमचंद के उपन्यास -एक दृष्टि** 169
  डा. कुमारी अनिता / पौलमी मजूमदार
- **महाजनी सभ्यता और प्रेमचन्द के हतभागे किसान** 180
  सुधा त्रिपाठी
- **'जमाना' और प्रेमचन्द** 191
  मणि भूषण कुमार
- **एक आस्थावान विराट व्यक्तित्व : प्रेमचन्द** 198
  डॉ. अमित मिश्रा
- **स्वाधीनता आन्दोलन का स्वरूप एवं रंगभूमि** 204
  डॉ. शंकर नाथ तिवारी
- **गोदान और मार्क्सवादी आलोचना** 213
  डॉ. मनोज कुमार मौर्य
- **दलित साहित्य के प्रतिपक्ष : प्रेमचन्द** 222
  डॉ. काली चरण झा
- **प्रेमचन्द की कहानियाँ : बनावट और बुनावट** 228
  डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी
- **प्रेमचन्द के उपन्यासों में जनवादी-चेतना** 237
  कौशलेन्द्र कुमार
- **तो क्या मुक्ति का कोई रास्ता शेष है!** 249
  डॉ. बिमलेन्दु तीर्थंकर

प्रेमचन्द की कहानियाँ : बनावट और बुनावट

डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी

हिंदी में शुरुआती दौर में जिन कहानियों की रचना हुई वे प्राय: पाश्चात्य कहानियों के साँचे में ही ढली थीं। उन कहानियों में पश्चिम में चर्चित कहानी की बनावट-बुनावट की ही बातें अधिकांशत: दिखीं। इस प्रकार हिंदी में कहानी का आरम्भिक रूप अधिकांशत: पाश्चात्य कहानियों के बनावट-बुनावट के ढर्रे पर ही आया है।

आधुनिक हिंदी कहानी का प्रारंभ सन् 1900 के इर्द-गिर्द माना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किशोरीलाल गोस्वामी की कहानी 'इंदुमती' को हिंदी की पहली मौलिक कहानी का दर्जा दिया है। 'इंदुमती' का प्रकाशन वर्ष सन् 1900 ही था। मुंशी प्रेमचन्द की पहली हिंदी कहानी 'सौत' सन् 1915 में प्रकाशित हुई। इस प्रकार हम देखते हैं कि सन् 1900 से 1915 तक के समय में इंदुमती के अतिरिक्त कुछ दूसरी कहानियों का भी प्रकाशन हुआ था। यथा 1903 में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' एवं गिरिजा दत्त वाजपेयी की कहानी 'पंडित और पंडितानी' प्रकाशित हुई। 1909 में वृंदावनलाल वर्मा की 'राखीबंध भाई', मैथिलीशरण गुप्त की 'नकली किला', सन् 1910 में जयशंकर प्रसाद की 'ग्राम', सन् 1911 में राधिकारमण सिंह की कहानी 'कानों में कंगना', 1913 में विश्वम्भरनाथ कौशिक की 'रक्षाबंधन' और 1915 में चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' जैसी प्रख्यात कहानी प्रकाशित हो गयी थी। यदि हम प्रेमचन्द की पूर्ववर्ती इन कहानियों पर दृष्टिपात करें तो बनावट और बुनावट की दृष्टि से ये कहानियाँ प्रेमचन्द की कहानियों से सर्वथा अलग हैं। इनके अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि एक नवीन चेतना का उदय तो हो चुका था लेकिन उनकी बनावट और बुनावट में कसाव का अभाव था। प्रेमचन्द की शुरुआती कहानियों में भी यही बात परिलक्षित होती है। लेकिन 1925 के